Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 GISRRJ | Volume 4 | Issue 5 | ISSN : 2582-0095

स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनशीलता का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

डॉ0 प्रवीन कुमार सिंह
शोध निर्देशक, असिस्टेंट प्रोफेसर
शिक्षक शिक्षा विभाग (बी0एड0), सल्तनत बहादुर पी0जी0 कॉलेज, बदलापुर, जौनपुर, उत्तर प्रदेश।

मनीष कुमार पासवान
शोधकर्ता, एम0ए0, एम0एड्0
सल्तनत बहादुर पी0जी0 कॉलेज, बदलापुर, जौनपुर (उ0प्र0), सम्बद्ध–वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 4 Issue 5
Page Number : 191-199

Publication Issue :
September-October-2021

Article History
Accepted : 01 Sep 2021
Published : 15 Sep 2021

शोधसाराश– सारांश–अध्ययनकर्त्ता द्वारा **स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनशीलता का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन** किया जा रहा है। उद्देश्य के रूप में सृजनशीलता की विमा प्रवाह, विविधता एवं मौलिकता के आधार पर विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव देखने का प्रयास किया जा रहा है। अध्ययन में विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर सृजनशीलता के प्रभाव को देखने के लिए सहसम्बन्धात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जा रहा है। प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के रूप में उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले में स्थित महाविद्यालयों एवं उसमें अध्ययनरत् स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को जनसंख्या माना गया है। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के चयन हेतु स्तरीकृत यादृच्छिकी विधि का प्रयोग किया जा रहा है। जिसमें गोरखपुर जिले के 20 महाविद्यालयों (10 शहरी एवं 10 ग्रामीण) में अध्ययनरत् 400 विद्यार्थियों (200 शहरी एवं 200 ग्रामीण क्षेत्र) का यादृच्छिकी न्यादर्शन विधि द्वारा चयन किया गया। तत्पश्चात् चयनित महाविद्यालयों से बी0ए0 एवं बी0एस–सी0 के 400 छात्र–छात्राओं को लेकर उन पर परीक्षणों को प्रशासित करके आँकड़ों का संकलन किया जा रहा है। उद्देश्यों की पूर्ति हेतु प्रोफेसर बाकर मेंहदी का शाब्दिक सृजनात्मक चिन्तन परीक्षण एवं शैक्षिक उपलब्धि–(विद्यार्थियों की पिछली परीक्षा में प्राप्त प्राप्तांक को सम्मिलित किया जा रहा है। अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण हेतु प्रसरण (एनोवा) मान एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया जा रहा है। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि– स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की सम्पूर्ण सृजनशीलता, प्रवाह एवं विविधता का उनके शैक्षिक

की–वर्ड : स्नातक, विद्यार्थी, सृजनशीलता, प्रवाह, विविधता, मौलिकता, शैक्षिक उपलब्धि, प्रभाव, एनोवा, टी–मूल्य।

प्रस्तावना–शिक्षा, चरित्र एंव मानसिक शक्ति के विकास के लिए व्यवस्थित रूप से दिया जाने वाले अनुदेश है। यहाँ व्यवस्थित अनुदेश से तात्पर्य, विशिष्ट अर्थ एवं संकेत की अभिव्यक्ति है जिसमें शिक्षार्थी शिक्षक से ज्ञान प्राप्त करता है।

शर्मा (2011), शिक्षा क्षमताओं और क्षमताओं में से एक को अपने अधिकतम स्तर तक प्राप्त करने में क्षमता प्रदान करता है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता स्वयं की दूसरों के और समूहों की भावनाओं को पहचानने, मूल्यांकन करने और नियंत्रित करने की क्षमता है। यह सफल होने और एक पूर्ण जीवन जीने के लिए दूसरों की भावनाओं से ज्ञान प्राप्त करने और लागू करने की क्षमता है। मेयर (2000) ने कहा कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता जीवन की सफलता को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह अधिक से अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि लोग अपने जीवन की बैरियर की सीढ़ी पर आगे बढ़ते है। स्टीन और बुक (2000) ने कहा, जो हमें जटिल दुनिया में अपना रास्ता बनाने में सक्षम

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

बनाता है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता किसी की एकात्मक क्षमता को जानने के लिए, किसी व्यक्ति की सोच प्रक्रिया के सहयोग से भावनाओं का न्याय करने के लिए उसे और दूसरों में खुशी की प्राप्ति के लिए व्यवहार करना है।

बडेबेरी (2003) ने कहा कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता भावनाओं को पहचानने और समझने की क्षमता है, और इस जागरूकता का उपयोग करके खुद को प्रतिबंधित करने और दूसरे के साथ संबंध बनाने का कौशल है। शैक्षिक उपलब्धि स्पष्ट हो जाती है, क्योंकि एक छात्र एक साथ संपन्न और उत्साही शिक्षार्थी के रूप में विकसित होता है जो अंततः सक्षम होता है।

जेनसन (1998) ने कहा कि छात्रों की अकादमिक उपलब्धि रचनात्मकता के अंको की उपलब्धि के साथ दृढ़ता से संबंधित है लेकिन एक अन्य अध्ययन में अनुभव किया गया कि रचनात्मकता और शैक्षिक उपलब्धि के बीच का संबंध काफी हद तक मानसिक गति घटक से जुड़ा था। शुरूआत में, रचनात्मकता और शैक्षिक उपलब्धि के बीच विभाजित अंतर लगभग 30 प्रतिशत था। दूसरी ओर, मानसिक गति घटकों को नियंत्रित करने के बाद, रचनात्मकता और शैक्षिक उपलब्धि के बीच साझा अंतर सबसे कम हुआ। यह परिणाम रचनात्मकता और अकादमिक उपलब्धि की वस्तुओं के सही होने के लिए मजबूत कड़ी है। विद्वानों ने बताया कि सभी ग्रेड स्तरों के माध्यम से छात्रों की उपलब्धि उनकी संज्ञानात्मक क्षमताओं पर सबसे अधिक निर्भर करती है। कई अध्ययनों से पता चलता है कि अकादमिक उपलब्धि की भविष्यवाणी करने में केवल बौद्धिक कारक को महत्व दिया जाता है। पहले के अध्ययनों ने बुद्धि को अकादमिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक के रूप में इंगित किया है। यह माना जाता था कि मजबूत वैज्ञानिक दिमाग अकादमिक सफलता का प्रमुख माप है। इस विश्वास का पाठयक्रम डिजाइन शिक्षण परीक्षण और अनुसंधान प्रयासों के लिए होतकारी था। साहित्य से पता चलता है कि कई वर्षो तक सफलता के भविष्यवकता के रूप में बुद्धि का अध्ययन मुख्य रूप से अनुकृति के अनुकूल उपयोग पर केन्द्रित था।

रचनात्मकता और शैक्षिणक उपलब्धि के संबंध में मिश्रा और गर्ग (2015) ने रचनात्मकता और शैक्षणिक प्रदर्शन के बारे मे एक अध्ययन किया। इस अध्ययन के लिए प्रतियोगियों को उच्च शिक्षा संस्थानों से चयनित किया गया। परिणामों से पता चलता है कि छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन और रचनात्मकता के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं था। इसी तरह के एक अध्ययन में, सिन्हा (2012) ने उधामिकता कक्षा में रचनात्मकता का पता लगाया। परिणामों से पता चला कि उच्च शिक्षा स्तर पर छात्रों की रचनात्मकता के लक्षण और अकादमिक प्रदर्शन गैर महत्वपूर्ण थे। कॉलेज स्तर पर एक अध्ययन में करीमी (2000) ने रचनात्मकता और शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंध का पता लगाया। परिणामों से पता चला कि रचनात्मकता और शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंध पाया जाता है। जबकि नूरी (2002) ने रचनात्मकता और शैक्षिक उपलब्धि के बीच सम्बंध का आवलोकन किया। उन्होंने पाया कि रचनात्मकता और शैक्षिक उपलब्धि के बीच किसी तरह का सबंध नहीं पाया जाता है। शोधकर्ताओं ने उल्लेख किया कि सामान्य संज्ञानात्मक के बीच एक मजबूत सम्बंध के लिए अनुकवजन्य साक्ष्य है, शैक्षिक उपलब्धि में अभी भी कहीं भीं 51 प्रतिशत से 75 प्रतिशत भिन्नता है जो कि अकेले सामान्य

क्षमता के उपायों के लिए जिम्मेदार है। इसके अतिरिक्त सामान्य संज्ञानात्मक क्षमता और शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंध की प्रकृति को समझने से अभ्यास और सिद्धान्त दोनों के लिए व्यापक प्रभाव पड़ता है।

अतः अध्ययनकर्त्ता द्वारा **स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनशीलता का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन** किया जा रहा है।

अध्ययन का उद्देश्य–

निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

1. स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनशीलता का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
2. स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनशीलता की विमा प्रवाह का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
3. स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनशीलता की विमा विविधता का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
4. स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनशीलता की विमा मौलिकता का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ–

अध्ययनों के आधार पर निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

H_{01} स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनशीलता का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

H_{02} स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनशीलता की विमा प्रवाह का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

H_{03} स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनशीलता की विमा विविधता का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

H_{04} स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनशीलता की विमा मौलिकता का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोध विधि–

अध्ययन में विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर सृजनशीलता के प्रभाव को देखने के लिए सहसम्बन्धात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जा रहा है।

जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के रूप में उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले में स्थित महाविद्यालयों एवं उसमें अध्ययनरत् स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को जनसंख्या माना गया है।

न्यादर्श–

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के चयन हेतु स्तरीकृत यादृच्छिकी विधि का प्रयोग किया जा रहा है। जिसमें गोरखपुर जिले के 20 महाविद्यालयों (10 शहरी एवं 10 ग्रामीण) में अध्ययनरत् 400 विद्यार्थियों (200 शहरी एवं 200 ग्रामीण क्षेत्र) का यादृच्छिकी न्यादर्शन विधि द्वारा चयन किया गया। तत्पश्चात् चयनित महाविद्यालयों से बी0ए0 एवं बी0एस–सी0 के 400 छात्र–छात्राओं को लेकर उन पर परीक्षणों को प्रशासित करके आँकड़ों का संकलन किया जा रहा है।

शोध उपकरण–

उद्देश्यों की पूर्ति हेतु प्रोफेसर बाकर मेंहदी का शाब्दिक सृजनात्मक चिन्तन परीक्षण एवं शैक्षिक उपलब्धि–(विद्यार्थियों की पिछली परीक्षा में प्राप्त प्राप्तांक को सम्मिलित किया जा रहा है।

सांख्यिकी विधियाँ–

अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण हेतु प्रसरण (एनोवा) मान एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया जा रहा है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

1. **स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनशीलता का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन–**

सारणी–1

सृजनशीलता एवं उपलब्धि

	High	Moderate	Low
N	46	181	173
%	11.50%	45.25%	43.25%
Σx=	18560	70087	64220
Σx^2=	7589818	27508751	24250696
Creativity M=	87.48	66.46	48.53
S.D.	8.56	6.34	6.76
Achievement M=	403.48	387.22	371.21
S.D.	47.44	45.31	48.9

	df	SS	MS	
BG	2	46270.05	23135.03	
WG	397	882195.73	2222.16	
Total	399	928465.78	25357.18	
F	**10.411**	**.05= 3.02**	**Significant**	
Group	**N**	**M**	**Difference of group**	**M1-M2**
High	46	403.48	1-2	16.26
Moderate	181	387.22	1-3	32.26
Low	173	371.21	2-3	16.01

स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों के सृजनशीलता का उपलब्धि पर प्रभाव ज्ञात हेतु 400 विद्यार्थियों को प्रतिशतता के आधार पर तीन समूह उच्च में केवल 46(11.50%), मध्यम में 181(45.25%) एवं न्यून में 173(43.25%) विद्यार्थी है जिनके सृजनशीलता का मध्यमान क्रमशः 87.48, 66.46 एवं 48.53 है तथा तीनों की उपलब्धि का Σx= 18560, 70087 एवं 64220 तथा Σx^2= 7589818, 27508751 एवं 24250696 है जिनके बीच एफ–मान 10.411 है जो .05 विश्वास स्तर पर सार्थक है अर्थात् तीनों समूहों की उपलब्धि 403.48, 387.22 एवं 371.21 है तीनों समूहों के मध्यमान का अन्तर (1–2, 1–3 एवं 2–3) में अन्तर 16.26, 32.26 एवं 16.01 है जो तीनों में सार्थक अन्तर है। उच्च एवं मध्यम सृजनशीलता वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि न्यून सृजनशीलता वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि से अधिक है। अतः विद्यार्थियों के सृजनशीलता का उनकी उपलब्धि पर प्रभाव है।

2. स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनशीलता की विमा प्रवाह का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन–

सारणी–2

प्रवाह एवं उपलब्धि

	High	Moderate	Low
N	43	186	171
%	10.75%	46.50%	42.75%
$\Sigma=\xi$	17158	71515	64194
$\Sigma\xi^2=$	6936170	27911691	24500804
Fluency M=	52.67	33.38	21.57
S.D.	6.59	5.59	4.15
Achievement M=	399.02	384.49	375.4
S.D.	46.38	47.36	48.64

	df	SS	MS	
BG	2	21043.16	10521.58	
WG	397	906822.61	2284.19	
Total	399	927865.78	12805.77	
F	**4.606**	**.05= 3.02**	**Significant**	
Group	**N**	**M**	**Difference of group**	**M1-M2**
High	43	399.02	1-2	14.53
Moderate	186	384.49	1-3	23.62*
Low	171	375.40	2-3	9.09

स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों के प्रवाह का उपलब्धि पर प्रभाव ज्ञात हेतु 400 विद्यार्थियों को प्रतिशतता के आधार पर तीन समूह उच्च में केवल 43(10.75%), मध्यम में 186(46.50%) एवं न्यून में 171(42.75%) विद्यार्थी है जिनके प्रवाह का मध्यमान क्रमशः 52.67, 33.38 एवं 21.57 है तथा तीनों की उपलब्धि का $\Sigma x=$ 17158, 71515 एवं 64194 तथा $\Sigma x^2=$ 6936170, 27911691 एवं 24500804 है जिनके बीच एफ–मान 4.606 है जो .05 विश्वास स्तर पर सार्थक है अर्थात् तीनों समूहों की उपलब्धि 399.02, 384.49 एवं 375.40 है तीनों समूहों के मध्यमान का अन्तर (1–2, 1–3 एवं 2–3) में अन्तर 14.53, 23.62 एवं 9.09 है जो 1–3 सार्थक अन्तर है। उच्च प्रवाह वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि न्यून प्रवाह वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि से अधिक है। अतः विद्यार्थियों के प्रवाह का उनकी उपलब्धि पर प्रभाव है।

3. स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनशीलता की विमा विविधता का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन–

सारणी–3

विविधता एवं उपलब्धि

	High	Moderate	Low
N	46	172	182
%	11.50%	43.00%	45.50%
$\Sigma x=$	18360	66622	67885
$\Sigma x^2=$	7416772	26192918	25739575
Flexibility M=	39.61	27.56	17.3
S.D.	4.1	3.32	3.92
Achievement M=	399.13	387.33	372.99
S.D.	44.41	47.62	48.1

	df	SS	MS	
BG	2	33147.12	16573.56	
WG	397	895318.65	2255.21	
Total	399	928465.78	18828.77	
F	**7.349**	**.05= 3.02**	**Significant**	
Group	**N**	**M**	**Difference of group**	**M1-M2**
High	46	399.13	1-2	11.79
Moderate	172	387.34	1-3	26.14
Low	182	372.99	2-3	14.34

स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों के विविधता का उपलब्धि पर प्रभाव ज्ञात हेतु 400 विद्यार्थियों को प्रतिशतता के आधार पर तीन समूह उच्च में केवल 46(11.50%), मध्यम में 172(43.00%) एवं न्यून में 182(45.50%) विद्यार्थी है जिनके विविधता का मध्यमान क्रमशः 39.61, 27.56 एवं 17.30 है तथा तीनों की उपलब्धि का Σx= 18360, 66622 एवं 67885 तथा Σx^2= 7416772, 26192918 एवं 25739575 है जिनके बीच एफ–मान 7.349 है जो .05 विश्वास स्तर पर सार्थक है अर्थात् तीनों समूहों की उपलब्धि 399.13, 387.33 एवं 372.99 है तीनों समूहों के मध्यमान का अन्तर (1–2, 1–3 एवं 2–3) में अन्तर 11.79, 26.14 एवं 14.34 है जो 1–3 एवं 2–3 में सार्थक अन्तर है। उच्च एवं मध्यम विविधता वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि न्यून विविधता वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि से अधिक है। अतः विद्यार्थियों के विविधता का उनकी उपलब्धि पर प्रभाव है।

4. स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनशीलता की विमा मौलिकता का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन–

सारणी–4

मौलिकता एवं उपलब्धि

	High	Moderate	Low
N	65	133	202
%	16.25%	33.25%	50.50%
Σx=	25174	50707	76986
Σx^2=	9907652	19679601	29762012
Originality M=	10.68	7.91	4.11
S.D.	0.85	0.82	1.5
Achievement M=	387.29	381.26	381.12

S.D.	49.68	51.29	45.78	
	df	**SS**	**MS**	
BG	2	2039.87	1019.94	
WG	397	926425.90	2333.57	
Total	399	928465.78	3353.50	
F	**0.437**	**.05= 3.02**	**Not Significant**	
Group	**N**	**M**	**Difference of group**	**M1-M2**
High	65	387.29	1-2	6.04
Moderate	133	381.26	1-3	6.17
Low	202	381.12	2-3	0.14

स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों के मौलिकता का उपलब्धि पर प्रभाव ज्ञात हेतु 400 विद्यार्थियों को प्रतिशतता के आधार पर तीन समूह उच्च में केवल 65(16.25%), मध्यम में 133(33.25%) एवं न्यून में 202(50.50%) विद्यार्थी है जिनके मौलिकता का मध्यमान क्रमशः 10.68, 7.91 एवं 4.11 है तथा तीनों की उपलब्धि का Σx= 25174, 50707 एवं 76986 तथा Σx^2= 9907652, 19679601 एवं 29762012 है जिनके बीच एफ–मान 0.437 है जो .05 विश्वास स्तर पर असार्थक है अर्थात् तीनों समूहों की उपलब्धि 387.29, 381.26 एवं 381.12 है तीनों समूहों के मध्यमान का अन्तर (1–2, 1–3 एवं 2–3) में अन्तर 6.04, 6.17 एवं 0.14 है जो असार्थक अन्तर है। अतः विद्यार्थियों के मौलिकता का उनकी उपलब्धि पर प्रभाव नहीं है।

निष्कर्ष

- उच्च सृजनशीलता वाले कम, मध्यम के साथ न्यून सृजनशीलता वाले विद्यार्थी अधिक तथा उच्च सृजनशीलता की उपलब्धि उच्च तथा अन्य की कम है अर्थात् सृजनशीलता का उपलब्धि पर प्रभाव है।
- उच्च प्रवाह वाले कम, मध्यम के साथ न्यून प्रवाह वाले विद्यार्थी अधिक तथा उच्च प्रवाह की उपलब्धि उच्च तथा अन्य की कम है अर्थात् सृजनशीलता की विमा प्रवाह का उपलब्धि पर प्रभाव है।
- उच्च विविधता वाले कम, मध्यम के साथ न्यून विविधता वाले विद्यार्थी अधिक तथा उच्च विविधता की उपलब्धि उच्च तथा अन्य की कम है अर्थात् सृजनशीलता की विमा विविधता का उपलब्धि पर प्रभाव है।
- उच्च मौलिकता वाले कम, मध्यम के साथ न्यून मौलिकता वाले विद्यार्थी अधिक है जबकि सभी के उपलब्धि में अन्तर बहुत कम है अर्थात् सृजनशीलता की विमा मौलिकता का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव नहीं है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अलफुहैगी, सारी सलेम (2015). स्कूल इन्वायरमेट एण्ड क्रियेटिविटी डेवलेपमेण्ट : ए रिव्यू ऑफ लिटेचर, जर्नल ऑफ एजूकेशनल एण्ड इस्ट्रक्शनल स्ट्डीज इन द वर्ल्ड, 5(2), पृ0 33–37।
2. एलिसावेट एवं अन्य (2013). प्राइमरी फिजिकल एजूकेशन परसपेक्टिव ऑफ क्रियेटिव : द कैरेक्टरस्टि्क्स ऑफ द क्रियेटिव स्टूडेन्ट एण्ड देयर क्रियेटिव आउटकम, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ ह्युमनिस्टिस एण्ड सोशल साइंस, 3(3), पृ0 234–247
3. कुमार, श्रवण (2018). इलाहाबाद मण्डल के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में आत्म–सम्प्रत्यय, सृजनात्मकता, अध्ययन आदतों का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन, शोध–प्रबन्ध (शिक्षाशास्त्र), नेहरू ग्राम भारती (मानित वि0वि0), प्रयागराज।
4. झा, जे.एस. एवं रस्तोगी, प्रवीन (2014). क्रियेटिविटी एण्ड स्टाइल ऑफ टीचिंग ऑफ हिन्दी मिडियम एण्ड अंग्रेजी मिडियम स्कूल टीचर्स – ए कम्प्रेटिव स्टडी, एडवाजरी बोर्ड ऑफ इण्डियन एजूकेशनल रिव्यू, एन.सी.ई.आर.टी. 52(1), 20–39।
5. यादव, कृष्ण कुमार (2013). उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की शाब्दिक सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर।
6. यादव, रीना (2015). ए स्टडी ऑफ क्रियेटिविटी थिंकिंग इन रिलेशन टू इन्टेलिजेन्स एण्ड सेल्फ–कन्सेप्ट ऑफ 10+2 स्टूडेन्ट्स, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एजूकेशनल प्लानिंग एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, 5(1), 7–10।
7. सागर, करताल (2015). माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सृजनशीलता तथा अध्ययन आदत से सम्बन्ध, लघु शोध प्रबन्ध, वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर।
8. सुरापूरामथ, ए. कोटेश्वरस्वामी (2014). ए स्टडी ऑफ रिलेशनशिप बिटविन क्रियेटिविटी एण्ड एकेडेमिक एचिवमेन्ट ऑफ सेकेण्डरी स्कूल पीपूल्स, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस, 3, स्पेशल इश्यू, 305–309।
9. सिद्दीकी, सैमा (2011). ए कम्प्रेटिव स्टडी ऑफ क्रियेटिविटी एमंग ब्वायज एण्ड गर्ल्स ऑफ क्लास–VII, इण्डियन एजूकेशन रिव्यू, 49(2), 5–14।